

પક્ષધર

અંક
40

નામવર વિશેષ

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : 20 अंक : 40

जनवरी-जून, 2026

संपादक
विनोद तिवारी

संपादन सहयोग
आशीष मिश्र
गायत्री यादव

पक्षधरता का संबंध मनुष्य के विश्वबोध और सद्-असद्
विवेक-बुद्धि अर्थात् अंतरात्मा के विवेक से है।

अक्षर संयोजन

कम्प्यूटेक सिस्टम

ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आवरण चित्र : यूसुफ़, कैनवास : 36 × 48 इंच

मूल्य : एक प्रति : ₹ 200 (व्यक्तिगत) ₹ 250 (संस्थागत)

सदस्यता :

वार्षिक (व्यक्तिगत) : ₹ 500 (डाक खर्च सहित)

वार्षिक (संस्थागत) : ₹ 600 (डाक खर्च सहित)

पंचवार्षिक : ₹ 3000

आजीवन : ₹ 10000

विदेश के लिए : \$ 100 (वार्षिक)

भुगतान हेतु बैंक-खाता विवरण :

A/c Name / No. : Pakshdhar / 31266280438

Bank : SBI / IFSC-SBIN0001067

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक **विनोद तिवारी, सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012** के लिए बी.के. ऑफसेट, एफ-93, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क :

सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5,

वसुंधरा, गाजियाबाद-201012

मो. 9560236569

ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

वेब पता : www.pakshdhar.com

PAKSHDHAR

A Bi-Annual Literary Magazine

Editor : Vinod Tiwari

Language : Hindi

यह अंक शजारेह तैय्यवे
गर्ल्स स्कूल, मीनाब (ईरान)
में, अमेरिकी और इजरायली
हमलें में मारी गयीं 168 मासूम
बच्चियों को समर्पित ।

अनुक्रम

संपादकीय

कहते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था 7

एक कवि : एक राग

ग्यारह कविताएँ : नीलेश रघुवंशी 23

नामवर विशेष

नामवर जी का चुंबक और मेरा लोहा : अष्टभुजा शुक्ल 32

ख़ामोश रहता हूँ तब भी विवाद : कमलानंद झा 48

नई कहानी और नामवर सिंह : संजीव कुमार 58

कविता-आलोचना की दूसरी परंपरा

(नामवर सिंह की कविता-आलोचना पर कुछ उधेड़बुन) : आशीष त्रिपाठी 69

औपनिवेशिक दासता से मुक्ति एवं नामवर सिंह का चिंतन : अनुज लुगुन 92

बातचीत

प्रेमचंद के बिना भारतीय समाज को नहीं समझ सकते 105
(आलोचक वीरेन्द्र यादव से बिपिन तिवारी और अटल तिवारी की बातचीत)

लेख

मध्यकाल में वर्ण और भक्ति का साहित्य : अरुण कुमार 128

वैश्वीकरण का प्रश्न और दलित चिंतन : भगवान साहु 145

हिंदी सिनेमा का भाषाई फ़लक : वर्चस्ववादी आख्यान : अंकित पाठक 154

कहानियाँ

घटाटोप : सुभाष शर्मा 180

ज़िंदगी इत्तफ़ाक़न : राकेश मिश्र 197

पापा आज आप ओकापी हो : तसनीम खान 209

सह-अस्तित्व : अखिलेश सिंह 215

कविताएँ

छह कविताएँ : केशव तिवारी 220

पाँच कविताएँ : मोहन राणा 224

पाँच कविताएँ : विनय सौरभ 228

लंबी कविता : सुंदरवन के मौली : जोशना बैनर्जी 239

सात कविताएँ : राही डूमरचीर 248

पाँच कविताएँ : देवेश पथ सारिया 256

डायरी अंश

वर्धा-डायरी : दूधनाथ सिंह 261

समीक्षाएँ

खोते जाते भारत को बचाने की पीड़ा : योगेश प्रताप शेखर 270

समकालीन हिंदी कविता का दक्षिण स्वर : बृजराज सिंह 278

औपनिवेशिक ज्ञान-रचना और भाषा की राजनीति : रमाशंकर सिंह 286

स्मृति और दंश (आसों नहीं लहू रोना) : गायत्री यादव 291

कहते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था

नाम नामवर : सादगी, पुरकारी, बेखुदी, हुशियारी

नामवर नाम उनके गाँव जीअनपुर में रहने वाली एक बुढ़िया माई ने दिया था। बकौल नामवर सिंह 'बाबूजी तो मेरा नाम रामजी रखना चाहते थे, पर घर के लोग बताते थे कि यह नाम सुनकर मैं ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता था, अतः सभी ने नामवर नाम को ही मोहर लगा दिया।' जिस बुढ़िया माई ने यह नाम दिया था, नामवर के जन्म के एक हफ़्ते के भीतर ही, कुत्ता काटने से, इस दुनिया से विदा ले लिया। लेकिन नामवर नाम रह गया। प्रेमचंद के यहाँ, उनकी किसी कहानी या उपन्यास में विशेषण के रूप में नामवर शब्द आता है। लेकिन नामवर सिंह नाम में, सिंह विशेष्य और नामवर विशेषण दोनों मिलकर अपनी अर्थछवि पा लेते हैं। अपना महत्व प्राप्त कर लेते हैं—सम्प्राप्तौ महिमानौ द्वौ स्थितौ पृथिव्याम् इव। सोचिए, नामवर पांडेय, नामवर तिवारी, नामवर गुप्ता, नामवर राय, नामवर यादव, नामवर जाटव आदि नामों में नामवर विशेषण क्या उसी अर्थछवि से महिमामंडित हो रहा है जैसा कि नामवर सिंह में। इसलिए यहाँ शेक्सपियर फेल हो जाते हैं। नाम तो नाम है। नाम में बहुत कुछ होता है।

नामवर सिंह के पिता नागर सिंह जीअनपुर गाँव के पहले व्यक्ति थे जो मीडिल पास थे और गाँव के ही पास आवाजापुरा में स्कूल मास्टर थे। माँ बागेश्वरी देवी सहज, सरल, निश्छल, उदार महिला। नामवर सिंह की मीडिल तक की पढ़ाई-लिखाई गाँव में ही हुई। आगे की पढ़ाई के लिए यू. पी. कॉलेज, बनारस आ गए। उदय प्रताप कालेज, बनारस से बारहवीं पास किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आगे की पढ़ाई के लिए दाखिला ले लिया। यहीं से 1949 में स्नातक और 1951 में परास्नातक किया। 'हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग' शीर्षक से उनका एम.ए. का लघु शोध-प्रबंध खूब प्रशंसित और चर्चित रहा। जिस साल भाषायी आधार पर राज्यों के बँटवारे का काम चल रहा था उसी साल 'पृथ्वीराजराज रासो की काव्यभाषा' पर डाक्टरेट की डिग्री हासिल की और आगे चलकर अपने समकालीनों में बहुतों के लिए डॉक्टर